**व्याकरण की दृष्टि से कालिदास के साहित्य का संधि प्रयोग**

**RAMESHWAR PRASAD RANAKOTI**

RESEARCH SCHOLAR SUNRIESE UNIVERSITY ALWAR

**DR. SWADESH YADAV**

ASSISTANT PROFESSOR SUNRISE UNIVERSITY ALWAR

**सारांश**

कालिदास (संस्कृत: कालिदासः ) पहली शताब्दी ई. पू. के संस्कृत भाषा के महान कवि और नाटककार थे। उन्होंने भारत की पौराणिक कथाओं और दर्शन को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं।

**कालिदासः  (**[**संस्कृत**](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE)**: कालिदासः )**

पहली शताब्दी ई.पू. के [संस्कृत](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%A4_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE) भाषा के महान [कवि](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%B5%E0%A4%BF) और [नाटककार](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%9F%E0%A4%95) थे। उन्होंने भारत की [पौराणिक कथाओं](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%A3) और [दर्शन](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B6%E0%A4%A8) को आधार बनाकर रचनाएँ की और उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन और दर्शन के विविध रूप और मूल तत्त्व निरूपित हैं। कालिदास अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण राष्ट्र की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और कुछ विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि का स्थान तक देते हैं।

[अभिज्ञानशाकुंतलम्](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%AD%E0%A4%BF%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%B2%E0%A4%AE%E0%A5%8D) कालिदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह नाटक कुछ उन भारतीय साहित्यिक कृतियों में से है जिनका सबसे पहले यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था। यह पूरे विश्व साहित्य में अग्रगण्य रचना मानी जाती है। [मेघदूतम्](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%98%E0%A4%A6%E0%A5%82%E0%A4%A4%E0%A4%AE%E0%A5%8D) कालिदास की सर्वश्रेष्ठ रचना है जिसमें कवि की कल्पनाशक्ति और अभिव्यंजनावादभावाभिव्यन्जना शक्ति अपने सर्वोत्कृष्ट स्तर पर है और प्रकृति के मानवीकरण का अद्भुत रखंडकाव्ये से खंडकाव्य में दिखता है। कालिदास [वैदर्भी रीति](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%A4%E0%A4%BF_%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%AF) के कवि हैं और तदनुरूप वे अपनी [अलंकार](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0) युक्त किन्तु सरल और मधुर भाषा के लिये विशेष रूप से जाने जाते हैं।

उनके प्रकृति वर्णन अद्वितीय हैं और विशेष रूप से अपनी उपमाओं के लिये जाने जाते हैं। साहित्य में औदार्य गुण के प्रति कालिदास का विशेष प्रेम है और उन्होंने अपने [शृंगार रस](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A5%83%E0%A4%82%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%B0_%E0%A4%B0%E0%A4%B8) प्रधान साहित्य में भी आदर्शवादी परंपरा और नैतिक मूल्यों का समुचित ध्यान रखा है। कालिदास के परवर्ती कवि [बाणभट्ट](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%A3%E0%A4%AD%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%9F) ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है।

## समय

कालिदास किस काल में हुए और वे मूलतः किस स्थान के थे इसमें काफ़ी विवाद है। चूँकि, कालिदास ने द्वितीय [शुंग](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A5%81%E0%A4%82%E0%A4%97_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%B5%E0%A4%82%E0%A4%B6) शासक अग्निमित्र को नायक बनाकर [*मालविकाग्निमित्रम्*](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%8D) नाटक लिखा और अग्निमित्र ने १७० ईसापू्र्व में शासन किया था, अतः कालिदास के समय की एक सीमा निर्धारित हो जाती है कि वे इससे पहले नहीं हुए हो सकते। छठीं सदी ईसवी में [बाणभट्ट](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%A3%E0%A4%AD%E0%A4%9F%E0%A5%8D%E0%A4%9F) ने अपनी रचना [हर्षचरितम्](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B7%E0%A4%9A%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A4%AE%E0%A5%8D) में कालिदास का उल्लेख किया है तथा इसी काल के पुलकेशिन द्वितीय के [एहोल अभिलेख](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%8F%E0%A4%B9%E0%A5%8B%E0%A4%B2_%E0%A4%85%E0%A4%AD%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%96) में कालिदास का जिक्र है अतः वे इनके बाद के नहीं हो सकते। इस प्रकार कालिदास के प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईसवी के मध्य होना तय है। दुर्भाग्यवश इस समय सीमा के अन्दर वे कब हुए इस पर काफ़ी मतभेद हैं। विद्वानों में (i) द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का मत (ii) प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत (iii) तृतीय शताब्दी ईसवी का मत (iv) चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत (v) पाँचवी शताब्दी ईसवी का मत, तथा (vi) छठीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का मत; प्रचलित थे। इनमें ज्यादातर खण्डित हो चुके हैं या उन्हें मानने वाले इक्के दुक्के लोग हैं किन्तु मुख्य संघर्ष 'प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत और 'चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत' में है।

**प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का मत -**

परम्परा के अनुसार कालिदास उज्जयिनी के उन राजा विक्रमादित्य के समकालीन हैं जिन्होंने ईसा से 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया। विक्रमोर्वशीय के नायक पुरुरवा के नाम का विक्रम में परिवर्तन से इस तर्क को बल मिलता है कि कालिदास उज्जयनी के राजा विक्रमादित्य के राजदरबारी कवि थे। इन्हें विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक माना जाता है।

**चतुर्थ शताब्दी ईसवी का मत -**

प्रो॰ कीथ और अन्य इतिहासकार कालिदास को [गुप्त](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%A4_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%B5%E0%A4%82%E0%A4%B6) शासक [चंद्रगुप्त विक्रमादित्य](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%A4_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF) और उनके उत्तराधिकारी [कुमारगुप्त](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%A4) से जोड़ते हैं, जिनका शासनकाल चौथी शताब्दी में था।ऐसा माना जाता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय ने [विक्रमादित्य](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF) की उपाधि ली और उनके शासनकाल को [स्वर्णयुग](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A3%E0%A4%AF%E0%A5%81%E0%A4%97) माना जाता है।

**विवाद और पक्ष-प्रतिपक्ष -**

* कालिदास ने [शुंग राजाओं](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A5%81%E0%A4%82%E0%A4%97_%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%9C%E0%A4%B5%E0%A4%82%E0%A4%B6) के छोड़कर अपनी रचनाओं में अपने आश्रयदाता या किसी साम्राज्य का उल्लेख नहीं किया। सच्चाई तो यह है कि उन्होंने [पुरुरवा](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A4%B5%E0%A4%BE) और [उर्वशी](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%89%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B6%E0%A5%80) पर आधारित अपने नाटक का नाम [विक्रमोर्वशीयम्](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%B6%E0%A5%80%E0%A4%AF%E0%A4%AE%E0%A5%8D) रखा। कालिदास ने किसी गुप्त शासक का उल्लेख नहीं किया। विक्रमादित्य नाम के कई शासक हुए, संभव है कि कालिदास इनमें से किसी एक के दरबार में कवि रहे हों। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि कालिदास शुंग वंश के शासनकाल में थे, जिनका शासनकाल 100 सदी ईसापू्र्व था।
* अग्निमित्र, जो मालविकाग्निमित्र नाटक का नायक है, कोई सुविख्यता राजा नहीं था, इसीलिए कालिदास ने उसे विशिष्टता प्रदान नहीं की। उनका काल ईसा से दो शताब्दी पूर्व का है और विदिशा उसकी राजधानी थी। कालिदास के द्वारा इस कथा के चुनाव और मेघदूत में एक प्रसिद्ध राजा की राजधानी के रूप में उसके उल्लेख से यह निष्कर्ष निकलता है कि कालिदास अग्निमित्र के समकालीन थे।
* यह स्पष्ट है कि कालिदास का उत्कर्ष अग्निमित्र के बाद (150 ई॰ पू॰) और 634 ई॰ पूर्व तक रहा है, जो कि प्रसिद्ध ऐहोल के शिलालेख की तिथि है, जिसमें कालिदास का महान कवि के रूप में उल्लेख है। यदि इस मान्यता को स्वीकार कर लिया जाए कि माण्डा की कविताओं या 473 ई॰ के शिलालेख में कालिदास के लेखन की जानकारी का उल्लेख है, तो उनका काल चौथी शताब्दी के अन्त के बाद का नहीं हो सकता।
* अश्वघोष के बुद्धचरित और कालिदास की कृतियों में समानताएं हैं। यदि अश्वघोष कालिदास के ऋणी हैं तो कालिदास का काल प्रथम शताब्दी ई॰ से पूर्व का है और यदि कालिदास अश्वघोष के ऋणी हैं तो कालिदास का काल ईसा की प्रथम शताब्दी के बाद ठहरेगा।
* हम कोई भी तिथि स्वीकार करें, वह हमारा उचित अनुमान भर है और इससे अधिक कुछ नहीं।

## जन्म स्थान

कालिदास के जन्मस्थान के बारे में भी विवाद है। मेघदूतम् में उज्जैन के प्रति उनकी विशेष प्रेम को देखते हुए कुछ लोग उन्हें उज्जैन का निवासी मानते हैं।

साहित्यकारों ने ये भी सिद्ध करने का प्रयास किया है कि कालिदास का जन्म उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग जिले के कविल्ठा गांव में हुआ था। कालिदास ने यहीं अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की थी औऱ यहीं पर उन्होंने मेघदूत, कुमारसंभव औऱ रघुवंश जैसे महाकाव्यों की रचना की थी। कविल्ठा चारधाम यात्रा मार्ग में गुप्तकाशी में स्थित है। गुप्तकाशी से कालीमठ सिद्धपीठ वाले रास्ते में कालीमठ मंदिर से चार किलोमीटर आगे कविल्ठा गांव स्थित है। कविल्ठा में सरकार ने कालिदास की प्रतिमा स्थापित कर एक सभागार का भी निर्माण करवाया है जहां पर हर साल जून माह में तीन दिनों तक गोष्ठी का आयोजन होता है, जिसमें देशभर के विद्वान भाग लेते हैं।

कालिदास के प्रवास के कुछ साक्ष्य बिहार के मधुबनी जिला के उच्चैठ में भी मिलते हैं। कहा जाता है विद्योतमा (कालिदास की पत्नी) से शास्त्रार्थ में पराजय के बाद कालिदास यहीं गुरुकुल में रुके। कालिदास को यहीं उच्चैठ भगवती से ज्ञान का वरदान मिला और वह महाज्ञानी बनें, कुछ विद्वान यह कहते हैं की महाकवि कालिदास का जन्म उच्चैठ में हुआ था और तब उसके बाद में वह उज्जैन गए थे । यहां आज भी कालिदास का डीह है। यहाँ की मिट्टी से बच्चों के प्रथम अक्षर लिखने की परंपरा आज भी यहाँ प्रचलित है।

कुछ विद्वानों ने तो उन्हें बंगाल और उड़ीसा का भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। कहते हैं कि कालिदास की [श्रीलंका](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80%E0%A4%B2%E0%A4%82%E0%A4%95%E0%A4%BE) में हत्या कर दी गई थी लेकिन विद्वान इसे भी कपोल-कल्पित मानते हैं।

## जीवन

कथाओं और किंवदंतियों के अनुसार कालिदास शारीरिक रूप से बहुत सुंदर थे और [विक्रमादित्य](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF) के दरबार के [नवरत्नों](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%A8) में एक थे। कहा जाता है कि प्रारंभिक जीवन में कालिदास अनपढ़ और मूर्ख थे।

कालिदास का विवाह विद्योत्तमा नाम की राजकुमारी से हुआ। ऐसा कहा जाता है कि विद्योत्तमा ने प्रतिज्ञा की थी कि जो कोई उसे [शास्त्रार्थ](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5) में हरा देगा, वह उसी के साथ विवाह करेगी। जब विद्योत्तमा ने शास्त्रार्थ में सभी विद्वानों को हरा दिया तो हार को अपमान समझकर कुछ विद्वानों ने बदला लेने के लिए विद्योत्तमा का विवाह महामूर्ख व्यक्ति के साथ कराने का निश्चय किया। चलते चलते उन्हें एक वृक्ष दिखाई दिया जहां पर एक व्यक्ति जिस डाल पर बैठा था, उसी को काट रहा था। उन्होंने सोचा कि इससे बड़ा मूर्ख तो कोई मिलेगा ही नहीं। उन्होंने उसे राजकुमारी से विवाह का प्रलोभन देकर नीचे उतारा और कहा- "मौन धारण कर लो और जो हम कहेंगे बस वही करना"। उन लोगों ने स्वांग भेष बना कर विद्योत्तमा के सामने प्रस्तुत किया कि हमारे गुरु आप से शास्त्रार्थ करने के लिए आए है, परंतु अभी मौनव्रती हैं, इसलिए ये हाथों के संकेत से उत्तर देंगे। इनके संकेतों को समझ कर हम वाणी में आपको उसका उत्तर देंगे। शास्त्रार्थ प्रारंभ हुआ। विद्योत्तमा मौन शब्दावली में गूढ़ प्रश्न पूछती थी, जिसे कालिदास अपनी बुद्धि से मौन संकेतों से ही जवाब दे देते थे। प्रथम प्रश्न के रूप में विद्योत्तमा ने संकेत से एक उंगली दिखाई कि ब्रह्म एक है। परन्तु कालिदास ने समझा कि ये राजकुमारी मेरी एक आंख फोड़ना चाहती है। क्रोध में उन्होंने दो अंगुलियों का संकेत इस भाव से किया कि तू मेरी एक आंख फोड़ेगी तो मैं तेरी दोनों आंखें फोड़ दूंगा। लेकिन कपटियों ने उनके संकेत को कुछ इस तरह समझाया कि आप कह रही हैं कि ब्रह्म एक है लेकिन हमारे गुरु कहना चाह रहे हैं कि उस एक ब्रह्म को सिद्ध करने के लिए दूसरे (जगत्) की सहायता लेनी होती है। अकेला ब्रह्म स्वयं को सिद्ध नहीं कर सकता। राज कुमारी ने दूसरे प्रश्न के रूप में खुला हाथ दिखाया कि तत्व पांच है। तो कालिदास को लगा कि यह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही है। उसके जवाब में कालिदास ने घूंसा दिखाया कि तू यदि मुझे गाल पर थप्पड़ मारेगी, मैं घूंसा मार कर तेरा चेहरा बिगाड़ दूंगा। कपटियों ने समझाया कि गुरु कहना चाह रहे हैं कि भले ही आप कह रही हो कि पांच तत्व अलग-अलग हैं पृथ्वी, जल, आकाश, वायु एवं अग्नि। परंतु यह तत्व प्रथक्-प्रथक् रूप में कोई विशिष्ट कार्य संपन्न नहीं कर सकते अपितु आपस में मिलकर एक होकर उत्तम मनुष्य शरीर का रूप ले लेते है जो कि ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इस प्रकार प्रश्नोत्तर से अंत में विद्योत्तमा अपनी हार स्वीकार कर लेती है। फिर शर्त के अनुसार कालिदास और विद्योत्तमा का विवाह होता है। विवाह के पश्चात कालिदास विद्योत्तमा को लेकर अपनी कुटिया में आ जाते हैं और प्रथम रात्रि को ही जब दोनों एक साथ होते हैं तो उसी समय ऊंट का स्वर सुनाई देता है। विद्योत्तमा संस्कृत में पूछती है "किमेतत्" परंतु कालिदास संस्कृत जानते नहीं थे, इसीलिए उनके मुंह से निकल गया "ऊट्र"। उस समय विद्योत्तमा को पता चल जाता है कि कालिदास अनपढ़ हैं। उसने कालिदास को धिक्कारा और यह कह कर घर से निकाल दिया कि सच्चे विद्वान् बने बिना घर वापिस नहीं आना। कालिदास ने सच्चे मन से [काली](https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A5%80) देवी की आराधना की और उनके आशीर्वाद से वे ज्ञानी और धनवान बन गए। ज्ञान प्राप्ति के बाद जब वे घर लौटे तो उन्होंने दरवाजा खटखटा कर कहा - *कपाटम् उद्घाट्य सुन्दरि!* (दरवाजा खोलो, सुन्दरी)। विद्योत्तमा ने चकित होकर कहा -- *अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः* (कोई विद्वान लगता है)।

**प्रस्तावना**

**सबसे कुशल पुरुषों में से एक-** चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में कालिदास नवरत्नों (अपने समय के सबसे कुशल पुरुष) में से एक थे। कालीदास के कार्यों में नाटक, महाकाव्य और गीत शामिल हैं। उनका नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् (शकुन्तला की मान्यता) उनके सभी कार्यों में सबसे प्रसिद्ध है और इसका दुनिया की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

**कालिदास जी के 7 महान कार्य -** कालिदास जी के 7 महान कार्य आज भी उपलब्ध हैं। जिनमे मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, रघु वंस, कुमारसंभवम्, मेघदूत और रितु समहारा।

जहाँ तक साहित्यिक योग्यता की बात है, मेघदूत (मेघ दूत) सबसे उत्कृष्ट कार्य है। पाठकों को इसकी कथा की सादगी, प्रकृति का चित्रण और प्यार की नाजुक अभिव्यक्ति और प्यार की पीड़ा से मोहित किया जाता है। दूसरी ओर, रितु समारा पूरी तरह से प्रकृति और विभिन्न मौसमों के माध्यम से अपने बदलते मूड के लिए समर्पित हैं।

**कालिदासस्य देशः :-**

कालिदासस्य को देश इति विषये महान् मतभेदः । केचन काश्मीरान्, अपरे वङ्गान , तदन्ये मिथिलां च तद्देशमाहुः । वयन्तु पश्यामः - मालवगण मुख्यविक्रमादित्यसभास्थस्य कालिदासस्य मालवमुख्यनगरी उज्जयिनी एव स्थानम् । कालिदासस्योज्जयिनीवर्णनपक्षपातोऽपि पक्षमिमं समर्थयते । कालि दासेन यथा सूक्ष्मेक्षिकयावन्तीनां भौगोलिकी स्थितिर्मेघदूते निबद्धा सा तद्देश वासित्वे एव सम्भवति । हिमालयादिवर्णनमपि वङ्गमिथिलादिवासिनः कालि दासस्य कृते न तथानुकूलं यथा मालववासिन इत्यपि पूर्वोक्तसमर्थकम् ।

यहां रघुवंश में इंदुमती के स्वयंवर प्रसंग का वर्णन है। इन्दुमती यहाँ घूमती हुई ज्वाला के समान वक्र है जिस राजा के सामने वह विवाह की माला लेकर जाती है वह पहले तो प्रसन्न होता है लेकिन जब आगे बढ़ती है तो उसका चेहरा ऐसा फीका पड़ जाता है मानो बिना दीए और रोशनी के महल हों। यहाँ रूपकों के माध्यम से कालिदास राजाओं की मनोवृत्तियों को भी स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। इसी सादृश्य से कालिदास को दीपशिखा कालिदास की उपाधि मिली।

भारतीय कवियों के लिए समय निर्धारण अत्यंत कठिन कार्य है, क्योंकि उन्होंने अपने बारे में कुछ भी नहीं लिखा है। यह स्थिति प्राचीन कवियों के समय में दूसरों द्वारा किये गये सन्दर्भों और अनुमानों से व्यवस्थित होती है। इसी कारण से कालिदास के समय के संबंध में भी मतभेद हैं:

विक्रम संवत के प्रवर्तक विक्रमादित्य नामक राजा की कल्पना करने वाले सर विलियम जोन्स काली दास को सभा का शोभा मानते थे और मानते थे कि कालिदास की उत्पत्ति ईसा पूर्व पहली शताब्दी में हुई थी।

**व्याकरण**

किसी भी "भाषा" के अंग-प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन "व्याकरण" कहलाता है, जैसे कि शरीर के अंग प्रत्यंग का विश्लेषण तथा विवेचन "शरीरशास्त्र" और देश प्रदेश आदि का वर्णन "भूगोल"। यानी व्याकरण किसी भाषा को अपने आदेश से नहीं चलाता घुमाता, प्रत्युत भाषा की स्थिति प्रवृत्ति प्रकट करता है। "चलता है" एक क्रियापद है और व्याकरण पढ़े बिना भी सब लोग इसे इसी तरह बोलते हैं; इसका सही अर्थ समझ लेते हैं। पद का विश्लेषण करके कि दो अवयव हैं - "चलता" और "है"। वह इन दो अवयवों का भी विश्लेषण करके बताएगा कि (च् अ अ त् आ) "चलता" और (ह अ इ उ) "है" के भी अपने अवयव हैं। "चल" में दो वर्ण स्पष्ट हैं; परन्तु व्याकरण स्पष्ट करेगा कि "च" में दो अक्षर "च्" "अ"। इसी "ल" में "ल्" और "अ"। अब इन अक्षरों के टुकड़े नहीं हो सकते; "" हैं । व्याकरण इन अक्षरों की भी बनाएगा, "व्यंजन" और "स्वर"। "च्" और "ल्" व्यंजन हैं और "अ" स्वर। चि, ची और लि, ली में स्वर हैं "इ" और "ई", "च्" और "ल्"। इस प्रकार का विश्लेषण बड़े काम की चीज है; व्यर्थ का गोरखधंधा नहीं है। यह विश्लेषण ही "व्याकरण" है।

**सन्धि की परिभाषाः**

दो पदों में संयोजन होने पर जब दो वर्ण पास-पास आते हैं] तब उनमें जो विकार सहित मेल होता है] उसे संधि कहते हैं।

**सन्धि के भेदः**

1- स्वर या अच् सन्धि

2- व्यंजन या हल् सन्धि

3- विसर्ग सन्धि

**परिभाषाः**

1- **स्वर या अच् सन्धि**

एक स्वर के साथ दूसरे स्वर का मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर या अच् कहते हैं। स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच मुख्य उपभेद हैं।

* दीर्घ संधि
* गुण संधि
* अयादि संधि
* वृद्धि संधि
* यण संधि
* पूर्वरूप संधि
* पररूप संधि
* प्रकृति भाव संधि

**दीर्घ संधिः**

(अकः) सवर्ण दीर्घः] जब हस्व( छोटे या दीर्घ ) बड़े) अ, इ, उ, ऋ, स्वर के बाद हस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ, स्वर आये तो दोनों सवर्ण स्वरों को मिलाकर एक दीर्घ वर्ण आ] ई,ऊ, ऋ, हो जाता है।

**उपसंहार**

कालिदास संस्कृत साहित्य के महानतम कवि हैं और उनकी काव्य शक्ति और प्रतिभा के कारण उन्हें कविकुल गुरु की उपाधि से सम्मानित किया गया है। वस्तुतः कालिदास संस्कृत साहित्य के रत्नों में मध्य रत्न हैं। पाश्चात्य, भारतीय, प्राचीन एवं आधुनिक विद्वानों की दृष्टि से कालिदास सर्वश्रेष्ठ एवं अद्वितीय कवि हैं।

यही बहुमुखी प्रतिभा उन्हें अन्य कवियों की तुलना में अद्वितीय बनाती है। कुछ विद्वान इनका समय ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी और कुछ छठी शताब्दी ईसा पूर्व का बताते हैं। अधिकांश विद्वानों के अनुसार कालिदास का जन्म उज्जैन में हुआ था। वह शैव धर्म का अनुयायी भी था। अधिकांश इतिहासकारों का मानना ​​है कि कालिदास गुप्त कवि थे और गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समकालीन थे।

**निष्कर्ष**

कालिदास संस्कृत साहित्य के महानतम कवि हैं। उनकी प्रतिभा सर्वव्यापी है. महाकाव्य, नाटक, गीत और काव्य सभी क्षेत्रों में उनकी रचनाएँ अद्वितीय हैं। उनकी रचनाओं में हमें समकालीन समाज और सांस्कृतिक चेतना के वास्तविक स्वरूप की झलक मिलती है। कालिदास को विश्व के महानतम लेखकों में से एक माना जाता है।

**ग्रन्थ-सूची**

### रघुवंशम् - कालिदास द्वारा रचित

### [ऋतुसंहारम्](https://sa.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%8B%E0%A4%A4%E0%A5%81%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%AE%E0%A5%8D) - कालिदास द्वारा रचित

### स्तोत्राणि - कालिदास द्वारा रचित

### मेघदूतम् - कालिदास द्वारा रचित

### पाणिनिपूर्वं व्याकरणम् - डा ऊमा शंकर शर्मा

### संस्कृतव्याकरणस्य परम्परा- <https://mycoaching.in/sanskrit>

### सन्धिप्रकरणम् - https://rbsereet.com/sanskrit-vyakaran-sandhi-pdf/